

## शरणागति गद्यम्

{॥ शरणागति गद्यम् ॥}

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

यो नित्यमच्युतपदाश्रुजयुग्मरुक् -

व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने ।

अस्मद्गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिन्धोः

रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

वन्दे वेदान्त कर्पूर चामीकरकरणुकम्

रामानुजार्यमार्याणां चूडामणि महर्निशम् ॥

श्री रङ्गनायिका रामानुज संवादः ॥

श्री रामानुजः ---

भगवन्नारायणाभिमतानुरूप स्वरूपरूप गुणविभव ईश्वर्य

शीलाद्यनवधिकातिशय असञ्च्येय

कल्याणगुणगणां पद्मवनालयां भगवतीं

श्रियं देवीं नित्यानपायिनीं निरवद्यां देवदेवदिव्यमहिषीम्

अखिलजगन्मातरम् अस्मन्मातरम् अशरण्यशरण्याम् अनन्यशरणः

शरणमहं प्रपद्ये ॥

पारमार्थिक भगवच्छरणारविन्दयुगळ

ঐकান্তিকাত্যস্তিক परभक्ति परज्ञान

परमभक्तिकृत परिपूर्णवरत नित्यविशदतम अनन्यप्रयोजन

अनवधिकातिशयप्रिय भगवदनुभवजनित अनवधिकातिशय प्रीतिकारित

अशेषावस्थाचित अशेषशेषतैकरतिरूप नित्यकैङ्कर्यप्राप्त्यपेक्षया

पारमार्थिकी भगवच्छरणारविन्द शरणागतिः

यथावस्थिता अविरताहस्तु मे ॥

श्री रङ्गनायिका ---

अस्तु ते । तथैव सर्वं सम्पत्स्यते ॥

॥ श्री रङ्गनाथ रामानुज संवादः ॥

श्री रामानुजः ---

अखिलहेयप्रत्यूनीक कल्याणैकतान ! श्वेतर समस्तवस्तुविलक्षण

अनन्तज्ञानानन्दैकस्वरूप ! स्वाभिमतानुरूप एकरूप अचिन्त्य दिव्याद्भुत

नित्यनिरवद्य निरतिशय उज्ज्वल्य सौन्दर्य सौगन्ध्य सौकुमार्य लावण्य

यौवनाद्यनन्तगुणनिधिदिव्यरूप !

स्वाभाविकानवधिकातिशय ज्ञानवलैश्वर्य वीर्यशक्ति तेजस्सौशील्य

वांसल्य मार्दव आर्जव सौहार्द साम्य कारुण्य माधुर्य गान्धीर्य उदार्य

चातुर्य स्थैर्य धैर्य शौर्य पराक्रम सत्यकाम सत्यसङ्कल्प कृतिवृ

कृतज्ञताद्यसञ्च्येय कल्याणगुणगणौघमहार्णव !

स्वाचितविधिधविचित्र अनन्ताश्चर्य नित्य निरवद्य निरतिशयसुगन्ध

নিরতিশয়সুখস্পর্শ নিরতিশয়ৌজ্জ্বল্য কিরীট মকুট চূড়াবতংস  
 মকরমুণ্ডল গ্ৰৈবেযক হার কেযূর কটক শ্ৰীবৎস কৌস্তুভ মুক্তাদাম  
 উদরবন্ধন পীতাম্বর কাঙ্ক্ষীগুণ নূপুরাদ্যপরিমিত দিব্যভূষণ ! স্বানুরূপ  
 অচিন্ত্যশক্তি শঙ্খচক্র গদাসি শার্ঙ্গাদ্যসঙ্খ্যেয  
 নিত্যনিরবদ্য নিরতিশয় কল্যাণদিব্যায়ুধ !  
 স্বাভিমত নিত্যনিরবদ্যানুরূপ স্বরূপ রূপ গুণ বিভব ঐশ্বর্য  
 শীলাদ্যনবধিকাতিশয় অসঙ্খ্যেয কল্যাণগুণগণশ্ৰীবল্লভ !  
 এবস্তুতভূমিনীলানাযক !  
 স্বচ্ছন্দানুবর্তি স্বরূপস্থিতিপ্রবৃত্তিভেদ অশেষশেষতৈকরতিরূপ  
 নিত্যনিরবদ্যানিরতিশয় জ্ঞানক্রিয়ৈশ্চর্যাদ্যনন্ত  
 কল্যাণগুণগণ শেষ শেষাশন  
 গরুডপ্রমুখ নানাবিধ অনন্তপরিজন পরিচারিকা পরিচরিত চরণযুগল !  
 পরমযোগিবান্ধনসাহপরিচ্ছেদ্য স্বরূপস্বভাব স্বাভিমত  
 বিবিধবিচিত্রানন্ত ভোগ্য ভোগোপকরণ ভোগস্থানসমৃদ্ধ অনন্তাশ্চর্য  
 অনন্তমহাবিভব অনন্তপরিমাণ নিত্য নিরবদ্য নিরতিশয় শ্ৰীবৈকুণ্ঠনাথ !  
 স্বসঙ্কল্পানুবিধায়ি স্বরূপস্থিতিপ্রবৃত্তি  
 স্বশেষতৈকস্বভাব প্রকৃতি পুরুষ  
 কালাত্মক বিবিধ বিচিত্রানন্ত ভোগ্য ভোক্তৃবর্গ ভোগোপকরণ ভোগস্থানরূপ  
 নিখিলজগদ্বদ্য বিভব লয়লীল !  
 সত্যকাম! সত্যসঙ্কল্প ! পরব্রহ্মভূত ! পুরুষোত্তম মহাবিবূতে ! শ্ৰীমন্!  
 নারায়ণ! বৈকুণ্ঠনাথ !  
 অপার কারুণ্য সৌশীল্য বাৎসল্য ঔদার্য ঐশ্বর্য সৌন্দর্য মহোদধে !

অনালোচিতবিশেষ অশেষলোকশরণ্য ! প্রণতাতিহর !  
আশ্রিতবাৎসল্যৈকজলধে! অনবরতবিদিত নিখিলভূতজাতযাথাত্ম্য!  
অশেষচরাচরভূত নিখিলনিয়মনিরত! অশেষচিদচিদ্বস্তু শেষভূত!  
নিখিলজগদাধার! অখিলজগৎস্বামিন্! অস্মৎস্বামিন্! সত্যকাম!  
সত্যসঙ্কল্প! সকলেতরবিলক্ষণ! অর্থিকল্পক! আপৎসখ! শ্রীমন্!  
নারায়ণ! অশরণ্যশরণ্য! অনন্যশরণঃ  
ত্বৎপাদারবিন্দয়ুগলং শরণমহং প্রপদ্যে ॥

অত্র দ্বয়(মনুসন্দেহ)ম্ ।

"পিতরং মাতরং দারান্ পুত্রান্ বন্ধূন্ সখীন্ গুরুন্ ।  
রত্নানি ধনধান্যানি ক্ষেত্রাণি চ গৃহাণি চ ॥

সর্বধর্মাশ্চ সন্ত্যজ্য সর্বকামাশ্চ সাক্ষরান্ ।  
লোকবিক্রাস্তচরণৌ শরণং তেহব্রজং বিভো! ॥ "

"ত্বমেব মাতা চ পিতা ত্বমেব ত্বমেব বন্ধুশ্চ গুরুস্ত্বমেব ।  
ত্বমেব বিদ্যা দ্রবিণং ত্বমেব ত্বমেব সর্বং মম দেবদেব ॥

পিতাহসি লোকস্য চরাচরস্য ত্বমস্য পূজ্যশ্চ গুরুর্গরীযান্ ।  
ন ত্বৎসমোহস্ত্যভ্যধিকঃ কুতোহন্যো লোকত্র যেহপ্যপ্রতিমপ্রভাব ! ॥ "

"तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।

पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायाईसि देव सोढुम् ॥ "

मनोवाक्कायैरनादिकालप्रवृत्त अनन्त अकृत्यकरण

कृत्याकरण भगवदपचार

भागवतापचार असह्यापचाररूप नानाविध अनन्तापचारान्

आरम्भकार्यान् , अनारम्भकार्यान् , कृतान् , क्रियमाणान् , करिष्यमाणान् च

सर्वान् अशेषतः ऋमस्व ।

अनादिकालप्रवृत्तविपरीतज्ञानं , आत्तुविषयं कृत्स्नजगद्विषयं च ,

विपरीतवृत्तं च अशेषविषयं ,

अद्यापि वर्तमानं वर्तिष्यमाणं च सर्वं ऋमस्व ॥

मदीयानादिकर्मप्रवाहप्रवृत्तां , भगवत्स्वरूपतिरोधानकरीं ,

विपरीतज्ञानजननीं , स्वविषयायाश्च भोग्यबुद्धेर्जननीं , देहेन्द्रियत्वेन

भोग्यत्वेन सूक्ष्मरूपेण च अवस्थितां , दैवीं गुणमयीं मायाम् ,

" दासभूतः शरणागतोहस्मि तवास्मि दासः , "

इति वक्तारं मां तारय ।

"तेषां ज्ञानी नित्ययुक्तः एकभक्तिर्विशिष्यते ।

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वाँव मे मत्म् ।

आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥

बहूनां जन्मानामस्ते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते ।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः " ॥

इति श्लोकत्रयोदितज्ञानिनं मां कुरुषु ।

" पुरुषः स परः पार्थ ! भक्त्या लभ्यस्वनन्याया " , "भक्त्या

त्वनन्याया शक्यः" , "मद्वक्तिं लभते पराम्"

इति स्थानत्रयोदितपरभक्तियुक्तं मां कुरुषु ।

परभक्तिपरज्ञानपरमभक्त्येकस्वभावं मां कुरुषु ।

परभक्ति परज्ञान परमभक्तिकृत परिपूर्णवरत नित्यविशदतम

अनन्यप्रयोजन अनवधिकातिशयप्रिय भगवदनुभवोऽहं , तथाविध

भगवदनुभवजनित अनवधिकातिशय प्रीतिकारित अशेषावस्थाचित

अशेषशेषतैकरतिरूप नित्यकिञ्चरो भवामि ।

श्री रङ्गनाथः ----

एवञ्च मङ्कैकस्कर्यप्राप्त्युपायतया अबकुण्डसमस्तवस्तुविहीनोऽपि , अनन्त

তদ্বিরোধিপাপাক্রান্তোহপি , অনন্ত মদপচারযুক্তোহপি , অনন্ত  
 মদীয়াপচারযুক্তোহপি , অনন্ত অসহ্যাপচারযুক্তোহপি , এতৎকৰ্মকাৰণভূত  
 অনাদি বিপৰীতাহঙ্কার বিমূঢ়াত্মস্বভাবোহপি , এতদুভয়কাৰ্যকাৰণভূত  
 অনাদি বিপৰীতবাসনাসম্বন্ধোহপি , এতদনুগুণ প্রকৃতিবিশেষসম্বন্ধোহপি ,  
 এতন্মূল আধ্যাত্মিক আধিভৌতিক আধিদৈবিক সুখদুঃখ তদেধতু  
 তদিতরোপেক্ষণীয় বিষয়ানুভব জ্ঞানসঙ্কেচরূপ মচ্চরণারবিন্দয়ুগল  
 একান্তিকাত্যন্তিক পরভক্তি পরজ্ঞান পরমভক্তিবিন্য়প্রতিহতোহপি ,  
 যেনকেনাপি প্রকাৰেণ দ্বয়বজ্ঞা ত্বম্ ,  
 কেবলং মদীয়ৈব দয়যা , নিশ্চেষ্টবিনষ্ট  
 সহেতুক মচ্চরণারবিন্দয়ুগল একান্তিকাত্যন্তিক পরভক্তি পরজ্ঞান  
 পরমভক্তিবিন্য়ঃ , মৎপ্রসাদলক্ষ মচ্চরণারবিন্দয়ুগল একান্তিকাত্যন্তিক  
 পরভক্তি পরজ্ঞান পরমভক্তিঃ , মৎপ্রসাদাদেব সাক্ষাৎকৃত যথাবস্থিত  
 মৎস্বরূপরূপগুণবিভূতি লীলোপকরণবিস্তারঃ , অপৰোক্ষসিদ্ধ মন্বিয়াম্যতা  
 মদাসৈয়করসাত্মস্বভাবাত্মস্বরূপঃ , মদেকানুভবঃ , মদাসৈয়কপ্রিয়ঃ ,  
 পরিপূৰ্ণানবরত নিত্যবিশদতম অনন্যপ্রযোজন অনবধিকাতিশয়প্রিয়  
 মদনুভবস্বং তথাবিধ মদনুভবজনিত অনবধিকাতিশয় প্রীতিকারিত  
 অশেষাবস্থাচিত অশেষশেষতৈকরতিরূপ নিত্যকিঙ্করো ভব ।  
 এবস্তুতোহসি ।  
 আধ্যাত্মিক আধিভৌতিক আধিদৈবিক দুঃখবিন্য়গন্ধরহিতস্বং  
 দ্বয়মর্থানুসন্ধানেন সহ সदैবং বজ্ঞা যাবচ্ছ রীরপাতং অত্রৈব শ্রীরঞ্জে  
 সুখমাস্ব ॥

शरीरपातसमये तू केवलं मदीयैव दयया अतिप्रबुद्धः , मामेवालोकयन् ,  
अप्रच्युत पूर्वसंस्कारमनोरथः , जीर्णमिव वस्त्रं सुखेन इमां प्रकृतिं  
शूलसूक्ष्मरूपां विसृज्य , तदानीमेव मत्प्रसादलब्ध मत्सरणारविन्दयुगळ  
एकान्तिकात्यन्तिक परभक्ति परज्ञान परमभक्तिकृत परिपूर्णवरत नित्य  
विशदतम अनन्यप्रयोजन अनवधिकातिशयप्रिय मदनूभवस्त्रुं तथाविध  
मदनूभवजनित अनवधिकातिशय प्रीतिकारित अशेषावस्थाचित  
अशेषशेषतैकरतिरूप नित्यकिञ्चरो भविष्यसि ॥

मातेहृदत्र संशयः ।

"अनृतं नोक्तपूर्वं मे न च वक्ष्ये कदाचन ।"

"रामो द्विर्नाभिभाषते ।"

"सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।

अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम ॥"

"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥"

इति मयैव ह्युक्तम् ।

अतस्त्रुं तव तत्त्वतो मद्ज्ञानदर्शनं प्राप्तिषु निस्संशयः सुखमास्र ॥

अन्त्यकाले स्मृतिर्यातु तव कैङ्कर्यकारिता ।

तामेनां भगवन्नद्य क्रियामाणां कुरुषु मे ॥



इति श्री भगवद्रामानुज विरचिते गद्यात्रय प्रबन्धे शरणागति गद्याम्

सर्वं श्री कृष्णार्पणमस्तु

From Sri T. R. Chari's Stotra site at

<http://www.geocities.com/Athens/Delphi/2627/index.html>

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

Last updated त्oday

<http://sanskritdocuments.org>

Sharanagati Gadyam Lyrics in Bengali PDF

% File name : tsarana.itx

% Location : doc\\_raama

% Author : Ramanujacharya

% Language : Sanskrit

% Subject : philosophy/hinduism/religion

% Transliterated by : T. R. Chari trchari at hotmail.com

% Proofread by : T. R. Chari trchari at hotmail.com

% Description-comments : One from gadyatrayam

% Latest update : January 5, 2000

% Send corrections to : [Sanskrit@cheerful.com](mailto:Sanskrit@cheerful.com)

% Site access : <http://sanskritdocuments.org>

%

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.

%

We acknowledge well-meaning volunteers for [Sanskritdocuments.org](http://Sanskritdocuments.org) and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

PDF file is generated [ October 13, 2015 ] at [Stotram](http://Stotram) Website